वैज्ञानिक शोध की समीक्षा व्यवस्था कटघरे में

ऐसा देखा गया है कि कई बार शोध पत्रिकाएं किसी शोध पत्र को नामंज़ूर कर देती हैं मगर आगे चलकर वही शोध पत्र अपने विषय में मील का पत्थर साबित होता है। आम तौर पर वैज्ञानिक शोध पत्रिकाओं में समकक्ष शोधकर्ताओं द्वारा समीक्षा की प्रक्रिया अपनाई जाती है जिसके अंतर्गत कोई भी शोध पत्र प्रकाशन हेतु प्रस्तुत होने पर उसे सम्बंधित विषय के अन्य शोधकर्ताओं के पास भेजकर उनकी राय मांगी जाती है। तो सवाल उठता है कि इसके बावजूद कैसे महत्वपूर्ण शोध पत्र खारिज हो जाते हैं।

कुछ शोधकर्ताओं ने इस सवाल की छानबीन करने का बीड़ा उठाया। इस टीम का नेतृत्व किया टोरोंटो विश्वविद्यालय के समाज वैज्ञानिक काइल साइलर ने। टीम ने तीन शोध पत्रिकाओं - *एनल्स ऑफ इंटरनल मेडिसिन*, *ब्रिटिश मेडिकल जरनल* और *दी लैंसेट* - को दस वर्ष पूर्व भेजे गए 1000 शोध पत्रों के हश्र का अध्ययन किया। इसके अलावा टीम ने यह भी विश्लेषण किया कि आगे चलकर जब इनमें से कोई शोध पत्र अंततः प्रकाशित हो गया, तो उसकी गुणवत्ता कैसी थी। गुणवत्ता का आकलन इस आधार पर किया गया कि किसी शोध पत्र का उल्लेख कितने अन्य शोध पत्रों में किया गया।

इन आंकड़ों के आधार पर टीम का पहला निष्कर्ष तो यह था कि उक्त शोध पत्रिकाओं में कचरे को छांटने और ठोस शोध को प्रकाशित करने की बढ़िया क्षमता है। मगर वे कई बार ऐसे शोध पत्रों को पहचानने में चूक जाती हैं जो आगे चलकर उस विषय में निहायत अहम साबित होते हैं। साइलर के मुताबिक उक्त 1000 शोध पत्रों में से सर्वोच्च 14 को तो खारिज कर दिया गया था।

साइलर व उनके दल ने इस अध्ययन के लिए शोध पत्रों की पांडुलिपियां तथा समीक्षकों की रिपोर्ट्स कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के संग्रहालय से प्राप्त की थीं। उन्होंने पाया कि उक्त तीन पत्रिकाओं में कुल 1008 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए थे और उनमें से मात्र 62 प्रकाशित हुए थे। इनके द्वारा अस्वीकृत 757 शोध पत्र अन्यत्र प्रकाशित हुए थे और शेष 189 में या तो व्यापक बदलाव हुए थे या वे अप्रकाशित रह गए थे।

अधिकांश मामलों में समीक्षकों ने बहुत मुस्तैदी से अपनी राय दी थी। अलबत्ता, 772 पांडुलिपियों को तो शोध पत्रिकाओं ने संपादक की मेज़ से ही खारिज कर दिया था; यानी ये शोध पत्र समीक्षकों के पास पहुंचे ही नहीं थे। और तो और, सर्वाधिक उल्लेख पाने वाले 15 में 12 शोध पत्रों का यही हश्र हुआ था। समीक्षकों के पास शोध पत्रों को भेजकर उनकी राय प्राप्त करना आसान काम नहीं होता, इसलिए पत्रिकाएं कई बार अपने स्तर पर ही आकलन कर लेती हैं। यह ज़रूरी नहीं कि संपादकों को उस विषय के अग्रणी शोध की जानकारी हो।

वैसे इस अध्ययन के बारे में एक सवाल यह उठाया गया है कि इसमें शोध पत्रों के महत्व को इस बात से आंका गया है कि किसी शोध पत्र का उल्लेख कितनी बार होता है। कई वैज्ञानिकों के मुताबिक यह सही पैमाना नहीं है। जैसे *नेचर* पत्रिका द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण से पता चला था कि सबसे अधिक उल्लेखित शोध पत्रों का सम्बंध किसी बुनियादी शोध से नहीं बल्कि किसी ऐसी विधि से होता है जो उस विषय में बहुत लोकप्रिय होती है।

एक मत यह भी है कि समकक्ष वैज्ञानिकों द्वारा समीक्षा का तरीका खामियों से भरा है। साइलर की टीम के अध्ययन से लगता है कि यह तरीका काफी अच्छे परिणाम देता है और फिलहाल निंदाई का यही सर्वोत्तम तरीका उपलब्ध है। ***(स्रोत फीचर्स)***